दिल्ली चिल्ड्रेन्स टाइम्स
वर्ष 1996 से प्रकाशित
Delhi Childrens Times
Since 1996
DELHI CHILD RIGHTS CLUB Since 1998
A Butterflies Initiative
नवंबर – दिसंबर, 2022

संपादक की कलम से

हेलो मित्रों,

आशा है कि आप सभी बहुत अच्छा कर रहे हैं। **दिल्ली चिल्ड्रेंस टाइम्स के नवंबर–दिसंबर संस्करण** को प्रकाशित करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। आप सभी को यह जानकर खुशी होगी कि नवंबर के महीने में हमने विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेकर विश्व बाल दिवस मनाया था। तो, प्यारे दोस्तों, यहाँ हम अपने समाचार पत्रों को सुंदर कहानियों, लेखों, रेखाचित्रों और विभिन्न समाचारों के साथ प्रस्तुत करते हैं। इसलिए हम दिल्ली के बच्चों के समय की दुनिया में आपका स्वागत करते हैं और मुझे आशा है कि आप सभी हमारे प्यारे छोटे दोस्तों द्वारा लिखे गए और रिपोर्ट किए गए लेखों को पढने का आनंद लेंगे, जो सभी दिल्ली बाल अधिकार क्लब के सदस्य हैं।

DCRC कोर चाइल्ड मेंबर ग्रुप का गठन

डीसीआरसी के बाल सदस्यों द्वारा

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि 'दिल्ली चाइल्ड राइट्स क्लब' एक तंत्र के रूप में काम करता है, जिसके द्वारा वे बच्चों के लिए सुरक्षित और मैत्रीपूर्ण शहर बनाने की दिशा में मिलकर काम कर सकते हैं। उनका क्लब दिल्ली में बच्चों को बच्चों के अधिकारों के बारे में जागरूकता और कार्रवाई बढ़ाने के तरीके खोजने के लिए मिलने में सक्षम बनाता है। इसके अलावा, यह बच्चों का एक मंच है। जब भी शहर की नीतियां या फैसले उन्हें प्रभावित करते हैं, तो उनसे परामर्श किया जाना चाहिए। इसलिए, डीसीआरसी के चाइल्ड सदस्यों ने एक नए तरीके से एक कोर ग्रुप बनाने का फैसला किया, क्योंकि कोविड के बाद कोर चाइल्ड सदस्य निश्चित और कार्यात्मक नहीं थे, इसलिए एक नया कोर ग्रुप बनाया गया।

कोर ग्रुप में डीसीआरसी के प्रत्येक सदस्य एनजीओ के बाल प्रतिनिधि हैं। यह कोर ग्रुप आने वाले 3 महीनों के लिए होगा, और वे महीने में एक बार अपने मुद्दों को साझा करने और अपनी गतिविधियों की योजना बनाने के लिए मिलेंगे।

दिल्ली बाल अधिकार क्लब सांस्कृतिक संध्या

डीसीआरसी के बाल सदस्यों द्वारा

दिल्ली बाल अधिकार क्लब के हम बाल सदस्यों ने DCRC सांस्कृतिक दोपहर का आयोजन किया। 15 DCRC के बाल सदस्यों ने विभिन्न सुंदर, पारंपरिक, और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। डीसीआरसी के 15 सहयोगी संगठनों के 390 बच्चों और कर्मचारियों ने इसमें भाग लिया। हम बच्चों के पास एक अद्भुत समय और मौका था। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पिछले दो वर्षों से महामारी 2020 के कारण हम बच्चों को किसी बड़े दर्शकों के सामने एक खुले मंच पर प्रदर्शन करने का पर्याप्त अवसर नहीं मिला। इसलिए DCRC के हम बाल सदस्यों ने एक साथ सांस्कृतिक दोपहर आयोजित करने का फैसला किया, जहाँ से बच्चे विभिन्न संगठन, विभिन्न रंगारंग और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन कर सकते हैं। यह लगभग 2 वर्ष से अधिक की अवधि के बाद DCRC के सभी सदस्यों के लिए एक साथ आने का एक मंच भी साबित हुआ।

किशोरावस्था में व्यवहार संबंधी समस्याओं पर डीसीआरसी के बाल सदस्यों के साथ सत्र

हम बाल सदस्यों ने ज्यादातर किशोरावस्था में व्यवहार संबंधी समस्याओं पर एक सत्र आयोजित करने का फैसला किया। हमने उन चुनौतियों पर चर्चा की जिनके कारण हमें व्यवहार संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ा। Butterflies के शरीफ भैया, जो इस विषय के विशेषज्ञ हैं, ने समझाया और चर्चा की कि किशोरावस्था शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से तेजी से विकास और परिवर्तन का समय है। कुछ किशोरों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, और इस तरह के बदलाव भयावह हो सकते हैं, जबकि अन्य इसे अपनी प्रगति में लेते हैं। जैसे–जैसे किशोर अपनी स्वतंत्रता पर जोर देना शुरू करते हैं, कुछ सामान्य व्यवहार संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। जबकि ध ाोखेबाज, जवाब देना और झूठ बोलना जैसे दुर्व्यवहार को संभालना ज्यादा मुश्किल लगता है, हिंसा किशोरों को नियंत्रण से बाहर कर देती है और माता–पिता खुद को असहाय पाते हैं। उन्होंने विभिन्न लैंगिक भूमिकाओं के बारे में भी बताया, जिसके अनुसार हर कोई समाज में लैंगिक भूमिकाएँ निभाता है, जिसका अर्थ है कि हमसे कैसे कार्य करने, बोलने, कपड़े पहनने, दूल्हा बनने और अपने निर्धारित लिंग के आधार पर आचरण करने की अपेक्षा की जाती है।

विश्व बाल दिवस समारोह

20 नवंबर 2022 को दिल्ली चाइल्ड राइट्स क्लब के हम बच्चों ने विश्व बाल दिवस समारोह में भाग लिया, जहाँ हमने विभिन्न मज़ेदार गतिविधियों, जैसे हाथ से पेंटिंग, मज़ेदार खेलों जैसे नींबू दौड़, हुला हूप, समूह नृत्य और संगीत में भाग लिया। यह हमारा दिन था और हमने इसे हद तक एन्जॉय किया।

मेरे सपनों का पार्क

By- Anushka (Udayan Care, Home- I)

मेरे पार्क में रैंप होगा जिसमें बच्चों के लिए व्हील चेयर होगी। मेरे पार्क में बड़ा सा रोलर कोस्टर होगा जिसमें सारे बच्चे मस्ती करेंगे। मेरे पार्क में डोरेमॉन, उसके दोस्त, और उसके गैजेट्स होंगे जो सारे बच्चे इस्तेमाल कर सकें। मेरे पार्क में बड़े बड़े और अलग अलग तरह के खिलौने होंगे जिसमें सारे बच्चे मस्ती करें और अलग अलग तरह के खाने होंगे जो बच्चों को अच्छे लगें। एक स्पाइडर मैन भी होगा जो जब बच्चों को चोट लग जाये या फिर गिर जाएँ तब उनकी मदद करेगा। मेरे पार्क में बच्चों को कोई डाँटेगा या मारेगा नहीं। वहाँ बहुत बड़े बड़े और अच्छे अच्छे झूले भी होंगे। वहाँ पर सभी बच्चे आएँगे लेकिन बड़े लोग सिर्फ़ मेरी इजाज़त के बाद ही आ सकते हैं। वहाँ कभी भी अंधेरा नहीं होगा। बच्चों को जितना मर्ज़ी खेलना है वो खेल सकते हैं। यह है मेरे सपनों के पार्क। तो बताइए, आप लोगों को कैसा लगा मेरे सपनों का पार्क?

मेरी संस्था

By- The children of CASP- Delhi Unit

हमारी संस्था का नाम कास्प दिल्ली यूनिट है। यह संस्था पहले गोविंदपुरी और संगम विहार में काम करती थी। फिर 2007 में कास्प दिल्ली यूनिट ने खादर में भी काम करना शुरू किया। जब इस संस्था ने खादर में काम करना शुरू किया तब यहाँ के बच्चों और परिवार में पढ़ने के प्रति कोई रुचि नहीं थी। यहाँ तक कि परिवार वाले अपने बच्चों को स्कूल में भी नहीं जाने देते थे।

लेकिन कास्प संस्था ने सभी परिवारों और बच्चों के जाकर बच्चों को और उनके माता पिता को पढ़ने के लिए प्रेरित किया और ऐसे बहुत सारे कार्यक्रम किए जैसे बाल पंचायत, रैली, आर्ट्स एंड क्राफ़्ट्स, स्पोर्ट्स क्लासेज़, चाइल्ड राइट्स सेशन ताकि बच्चों का पढ़ाई के प्रति रुझान बढ़ सके। और आज खादर के ज्यादा से ज्यादा परिवार ऐसे हैं जो शिक्षा के महत्व को समझते हैं।

Artworks

COVID के बाद से जीवन कैसे बदल गया है?

By- Karishma (Udayan care Home 1)

COVID–19 ने हमारे संचार करने, दूसरों की देखभाल करने, हमारे बच्चों को शिक्षित करने, काम करने और बहुत कुछ करने के तरीके को बदल दिया है। UAB के विशेषज्ञ इन परिवर्तनों पर विचार करते हैं। पिछले दो वर्षों में, दुनिया ने COVID–19 महामारी के कारण व्यवहार, अर्थव्यवस्था, चिकित्सा, और उससे आगे के क्षेत्र में बदलाव देखा है। लंबी अवधि के कोरोनावायरस प्रभावों में आम तौर पर आर्थिक असमानता में वृद्धि, अधिक कारें और सड़क पर कम लोग शामिल हैं (जिसका अर्थ है कि लोग अपने घरों के अंदर रहने की आदत विकसित करेंगे और हम पहले की तुलना में बहुत कम लोगों को बाहर देखेंगे), में परिवर्तन शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, जीवनशैली में बदलाव, कोविड–19 के बाद का जीवन न केवल प्रकाशस्तंभ को घर लाने तक खिंचेगा, यह एक पूरी नई संस्कृति को गले लगाएगा जिसमें रूढ़िवादी सोच को फेंक दिया जाएगा, यह चुनौतियों की एक नई टोकरी से लैस होगा, जैसे एक राजसी पोर्टल जो स्वागत करता है हमें एक नई दुनिया में।

कोविड के समय

By- Karishma (Udayan Care, Home- I)

कोविड के दौरान सब लोग अपने अपने घर में बंद रहते थे। अगर ज़रूरी सामान लेना होता तो ही बाहर निकलते थे। वो भी मास्क पहन के। 2 गज़ की दूरी बनाये रखना अनिवार्य था।हर कोई व्यक्ति घर में बंद रह कर परेशान हो गया था। लोग पार्क या अपने अपने कामों पर भी नहीं जा सकते थे और लोगों के पास खाने पीने का समान भी नहीं था, और ना ही पैसे थे।लोगों को इस भयानक महामारी का सामना करना पड़ा।इस दौरान बच्चों कि पढ़ाई का नुक़सान ना हो इसलिए अध्यापिका ने ऑनलाइन पढ़ाना शुरू कर दिया।ऑनलाइन कक्षा शुरू हो गई पर कक्षा लेते समय बच्चों का दिमाग़ गेम खेलने में लगा रहता था।अध्यापिका जो पढ़ती थी वो समझ भी नहीं आता था।

कोविड के बाद

By- Karishma (Udayan Care, Home- I)

कोविड के जाने के बाद सब ठीक हो गया है और अब सब लोगों ने अपने–अपने कामों पर जाना शुरू कर दिया है।स्कूल और कॉलेजों में भी बच्चों का जाना शुरू हो गया है।अध्यापिका जो बच्चों को पढ़ाती थीं वो अब बच्चों को अच्छे से समझ आता है।बच्चे अब पार्क में खेलने भी जाते हैं और खूब सारी मस्ती और खेल कूद भी करते हैं।अब सब लोग खुशी खुशी अपने परिवार वालों से मिलने भी जा सकते हैं।इतने दिनों बाद मुझे स्कूल जाकर बहुत ही अछा लगा।ऑनलाइन के समय जो अध्यापिका पढ़ती थीं वो अब मुझे अच्छे से समझ में आता है।इतने दिनों बाद हम अपने दोस्तों से मिल पाए, सब से अच्छे से बात कर पाए, और पूरे स्कूल में सबके साथ घूमा।

Experience of getting back to school after pandemic 2020 – Positive & Negative –

By- Kajal (Udayan Care, Home 1)

My experience of going back to school was both negative and positive. Negative because the students who were not interested in studies were also promoted to higher classes and were studying with us and they are completely blank as they do not understand anything of the syllabus.

Positive because it was after such a long time, we are meeting our teachers and friends. During pandemic we got to learn a lot about human nature and how to deal with people. Meeting our friends and teachers in person was such a wonderful experience.

भारतीय स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ या आजादी का अमृत महोत्सव

By- Children of Prabhat Tara

भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत की भावना से भारत को अपनी यात्रा में अब तक लाने में सहायक लोगों को श्रद्धांजलि देने के साथ, भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष मनाने का निर्णय लिया। यह ब्रिटिश राज से आजादी के 75 साल और भारत के लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के इतिहास को मनाने और मनाने की पहल है।

मुख्य रूप से आजादी का अमृत महोत्सव के पांच विषय हैं

1. स्वतंत्रता संग्रामरू यह उन अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों पर ध्यान केंद्रित करता है और उनका जश्न मनाता है जिन्होंने भारत को अंग्रेजों से आजादी दिलाने में मदद की थी।

2. 75 पर विचाररू यह विषय उन विचारों और आदर्शों से प्रेरित कार्यक्रमों और घटनाओं को सुर्खियों में लाता है जिन्होंने अब तक भारत को आकार दिया है और अगले 25 वर्षों तक प्रभावित करने वाले हैं

3. 75 पर संकल्परू यह विषय भारत की नियति को आकार देने के लिए सामूहिक संकल्प और दृढ़ संकल्प पर केंद्रित है।

4. 75 पर कार्रवाईरू यह विषय उन सभी प्रयासों पर केंद्रित है जो भारत को विश्व स्तर पर अपनी स्थिति बनाने के लिए वर्तमान में सरकार द्वारा किए जा रहे हैं। इसका एक आदर्श वाक्य हैरू सबका साथ। सबका विकास। सबका विश्वास, सबका प्रयास

5. 75 वर्ष पर उपलब्धियांरू यह विषय भारत के प्राचीन इतिहास से लेकर आज के 75 वर्ष के स्वतंत्र देश तक प्राप्त सभी मील के पत्थर और सामूहिक उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है।

खादर की डिस्पेन्सरी

By-Ritu Raj (Class- IVth, CASP Delhi Unit)

मेरा नाम रितु राज है। मैं मदनपुर खादर जे. जे. कॉलोनी में रहता हूँ। मेरी उम्र 11 साल है और मैं आज आपको अपने इलाक़े के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ।

हमारे इलाक़े में एक डिस्पेन्सरी है जिसमें खादर के ज्यादा से ज्यादा लोग दवाई लेने जाते हैं। यह सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक खुली रहती है।

लेकिन इस डिस्पेन्सरी में यह सुविधा नहीं है की लोगों को अपने इलाज के लिए सरकारी अस्पताल जैसे कि एम्स या सफ़दरजंग ना जाना पड़े।

हमारे खादर की डिस्पेन्सरी में केवल छोटी–मोटी बीमारी जैसे बुख़ार, सर्दी, खांसी, इत्यादि के इलाज की सुविधाएँ उपलब्ध है।

मेरा खादर

By- Rinki (Class- VIIIth, CASP Delhi Unit)

जे. जे. कॉलोनी मदनपुर खादर की बनावट सन् 2000 में हुई थी। जे. जे. कॉलोनी का फुल फॉर्म झुग्गी झोपड़ी कॉलोनी है। जब ये बनावट हुई थी तब मैं पैदा भी नहीं हुई थी। इसकी स्थापना के समय से अब तक यहाँ का समुदाय अपने जीवन के संरचनात्मक, राजनीतिक, आर्थिक, और सामाजिक पहलुओं में कई परिवर्तनों से गुज़र चुका है। नेहरू प्लेस, कालकाजी मंदिर, राज नगर, आर के पुरम, निज़ामुद्दीन, ग्रीन पार्क, अलकनंदा व आई टी ओ से लोगों को लाकर बेहद चुनौतीपूर्ण और कठिन परिस्थितियों में जे. जे. कॉलोनी में पुनवर्सित किया गया था। इन लोगों को बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ा, जैसे पानी, बिजली, नल, कच्ची सड़कें, इत्यादि। लोगों को मीठा पानी लेने के लिए खादर गाँव तक जाना पड़ता था। यहाँ तक कि लोग पानी के लिए नेहरू प्लेस तक भी जाते थे। साधन में साईकल या रिक्शा था और लोगों को बिना बिजली के ही रहना पड़ता था। शौचालय ना होने के कारण लोगों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता था।

अब पानी, बिजली, शौचालय, सड़कें, गाड़ी, जैसी सारी चीज़ें मौजूद हैं। अब सबके घर में बिजली है। लेकिन आज भी सब के घर में शौचालय नहीं है। बहुत कम लोगों के घरों में शौचालय है। सरकार ने पक्की सड़कें बनवायी हैं। सड़क पे कार, बाइक, ऑटो, बैटरी रिक्शा, साइकल, इत्यादि चलते हैं।

अपनी अपनी पसंद

By- Akshat, Deepalaya Community Library, Gola Kuan

'अपनी अपनी पसंद' कहानी मुझे बहुत अच्छी लगी क्योंकि ये कहानी हमारी अपनी पसंद के बारे में है। हम सबकी अपनी अपनी पसंद होती है, और हम अपनी पसंद को एक दूसरे पे थोप नहीं सकते हैं। ठीक इसी तरह इस कहानी में भी एक मछुआरन एक दिन मछली बेचने जाती है और नदी में बाढ़ आने के कारण अपने घर वापस नहीं जा पाती है। तभी उसे एक मालिन मिलती है जो राजा के खूबसूरत बाग़ में काम करती है। मछुआरन को परेशान देख कर मालिन मछुआरन को अपने घर चलने को कहती है। मछुआरन साथ चलती है लेकिन मालिन को मछुआरन से मछलियों की गंध और मछुआरन को मालिन से फूलों की गंध महसूस होती है। लेकिन दोनों एक दूसरे से शिकायत नहीं करती हैं बल्कि चुपचाप अपनी पसंद की खुशबू के साथ रात बिताती हैं।

इस कहानी में मालिन और मछुआरन का यह व्यवहार मुझे बहुत अच्छा लगा की हमें एक दूसरे की पसंद का पूरा सम्मान करना चाहिए। इस कहानी को पढ़ते हुए मुझे अपने घर में अपने चाचा और चाची की रोज़–रोज़ की बहस याद आ गई। मेरे चाचा को मीट–मांस बहुत पसंद है और चची को इससे बदबू आती है और एलर्जी होती है। चाची को मिठाइयाँ पसंद हैं और चाचा को बिल्कुल भी पसंद नहीं हैं। दोनों की इस बात पर रोज़ लड़ाई होती है। काश चाचा चाची भी एक दूसरे की पसंद का सम्मान करते और कोई बीच का रास्ता निकाल पाते।

The Little Plant

By- Ambia Khatoon (Class- 5E, Okhla Contact Point, Butterflies)

In the heart of a seed
Buried deep so deep
A tiny plant
Lay fast asleep
Wake, said the sunshine
And creep to the light
Wake, said the voice
Of the raindrops bright
The little plant heard
And it rose to see
What the wonderful
Outside world might be.

बारिश

By- Kiran (Class 9th, Deepalaya Community Library, Gola Kuaan)

बारिश कभी भी किसी से भेद भाव नहीं करती।
वो तेरी छत पर कम बरसी है,
तो मेरी छत पर ज्यादा नहीं बरसेगी।
दुश्मनी नहीं है बारिश कि किसी से,
इसलिए वो भेद भाव नहीं करती।

अब वो बात अलग है कि,
वो मुंबई में ज्यादा बरसती है और दिल्ली में कम
अब जहाँ उसके अच्छे संबंध होंगे, वहीं ना जाएगी
लेकिन वो कोशिश ज़रूर करती है,
की सबके साथ equal रहे।

देखो funda बिल्कुल clear है,
इंसान वहीं जाता है जहां उसे सम्मान मिलता है।
लेकिन nature को फ़र्क़ नहीं पड़ता,
वो सबके साथ equal रहती है।
क्योंकि nature का nature ही यही है।

बारिश कभी भी गिरने से डरती नहीं है,
क्योंकि उसे पता है की मैं पानी से बनी हूँ
और पानी में ही मिल जाऊँगी।

वो कभी show-off नहीं करती
वो आती है तो सब को गीला करके जाती है।
बारिश को फ़र्क नहीं पड़ता कोई क्या सोचता है,
क्योंकि उसका मक़सद पता है सब को।
जब बारिश कमज़ोर होती है तो वो शांत होती है,
और जब बारिश में ताक़त होती है तो वो खूब हल्ला मचाती है।
बारिश जब भी गिरती है तो खुश होकर गिरती,
क्योंकि ये उसका अंत नहीं,
वो किसी में समा रही है।

खुदको control करना सीखो,
क्योंकि out-of-control हमेशा बर्बादी बन जाती है।

कई बार बारिश में घुल जया करो,
क्योंकि बारिश सबको धूल देती है।

रावण

By- Sejal, Yogesh (Institute of Social Service, Prabhat Tara)

कल रात रावण मेरे सपने में आया और उसने मुझसे पूछा–

रावण– "हर साल दशहरा के दिन मुझे क्यों जलाया जाता है?"

मैं–"क्योंकि जिस दिन तुम्हें जलाया जाता है उस दिन अच्छाई की जीत होती है और बुराई की हार। हर साल बुराई का अंत करने के लिए रावण का दहन करते हैं।"

रावण–(हंसते हुए) "तुम हर साल मुझे जला तो देते हो पर मैं हर साल ज़िंदा हो जाता हूँ।"

मैंने पूछा, "वो कैसे?"

(रावण ज़ोर–ज़ोर से हंसने लगा और कहता है)

रावण– "मनुष्य, मैं हर मनुष्य के अंदर जीवित हूँ। मैं लोगों में छल कपट पैदा करके सब को एक दूसरे से झगड़वाता हूँ। मैं सब के अंदर बुराई पैदा करता हूँ। इस प्रकार मैं सबके अंदर जीवित हो जाता हूँ।"

मैंने सोचा रावण सही कह रहा है। अगर हम अपने अंदर के रावण का दहन कर दें तो दुनिया में बुराई कभी पैदा ही नहीं होगी।

नन्हा पौधा

By- Shweta (Class- VIIth D, Institute of Social Service, Prabhat Tara)

'एक दिन मैं सो रही थी। मेरे सपने में एक नन्हा पौधा आया और बोला– "मुझे तुमलोग उगाते हो फिर बाद में मुझे काट देते हो। तुम अपने पर्यावरण को ख़राब कर रहे हो। अगर तुम पेड़ पौधे काट दोगे तो तुमलोगों को साँस लेने में बहुत तकलीफ़ होगी। और तो और, अगर पेड़ को ना काटो तो भारत कितना हरा भरा दिखेगा। पेड़ पौधे ही फल, सब्ज़ी, दवाई, काग़ज, गोंद, इत्यादि सब कुछ देते हैं। उससे तुम्हारा ही फ़ायदा होता है।

इसके अलावा, अगर तुम प्लास्टिक का उपयोग कम करोगे तो और अच्छी बात होगी। आज कल अगर इंसान एक भी दिन प्लास्टिक के उपयोग के बिना काट ले तो बहुत बड़ी बात है। प्लास्टिक की थैली का इस्तेमाल ना कर के कपड़े के बने बैग का उपयोग करना चाहिए। इससे पर्यावरण में बदलाव आएगा। बाहर से प्लास्टिक की बोतल में पानी पीने से अच्छा है खुद कि बोतल ले कर जाएँ। किंतु अगर प्लास्टिक की बोतल ख़रीदते हैं तो उसकी एक्सपीयरी डेट ज़रूर चेक कर लें। पानी की प्लास्टिक कि बोतलों के अंदर पानी एक्सपायर नहीं होता, लेकिन बोतल एक्सपायर हो जाती है जिसके कारण बोतल के अंदर के पानी में कई तरह के इन्फेक्शन पैदा हो जाते हैं जो इंसान के पेट को तकलीफ़ पहुँचाते हैं।

इसलिए, प्लास्टिक का इस्तेमाल कम करें। पेड़ पौधे ना काटें। अगर इसका पालन अभी नहीं किया तो आने वाली स्तिथि बहुत ख़राब होने वाली है।"

Let's Play Quiz

Which is the world's largest ocean?

Which is the largest internal organ in the human body?

What is the group of stars called that form an imaginary picture?

Which planet is known to have the most gravity?

Which is the closest star to the Earth?

Who invented the telephone?

From which country did the Statue of Liberty come from?

Which are the two houses of the Parliament?

Which is India's smallest state?

Which city is known as the Blue City of India?

Who is the first citizen of India?

Name the first satellite launched by India?

Which is the first Indian film?

Which is the National motto of India?

Who is known as the father of Indian Constitution?

Pacific Ocean, The Liver, Constellation, Jupiter, The Sun, Alexander Graham Bell, France, The Rajya Sabha and Lok Sabha, Goa, Jodhpur, The President of India, Aryabhata, Raja Harishchandra, Satyameva Jayate, Dr. B.R. Ambedkar

Find the Hidden Words

WINTER
Word Search

T	E	O	G	S	V	S	N	O	W	M	A	N	B	J
H	F	S	S	S	S	W	E	A	T	E	R	P	L	F
O	R	O	L	D	N	C	O	L	D	U	R	L	A	W
T	E	A	S	O	Q	O	A	G	E	M	X	E	N	Q
C	E	C	Z	B	L	A	W	B	G	I	F	A	K	E
H	Z	Q	L	X	L	L	U	P	G	T	E	R	E	K
O	I	U	S	W	Y	I	S	M	N	T	N	M	T	K
C	N	J	O	C	G	E	Z	X	O	E	E	U	D	E
O	G	B	T	G	T	L	B	Z	G	N	F	F	H	D
L	K	M	T	A	W	J	O	F	A	S	R	F	Z	J
A	B	U	K	B	Y	S	O	V	L	R	C	S	X	F
T	Z	S	F	V	E	I	Z	E	E	G	D	C	R	G
E	H	I	N	L	S	Z	C	E	P	S	I	A	J	G
I	S	I	C	U	G	I	U	I	R	X	C	F	R	C
A	W	L	A	C	O	G	K	W	T	S	V	P	T	Z

WORD LIST

BLANKET	EARMUFFS	GLOVES	MITTENS	SNOW
BLIZZARD	EGGNOG	HOT CHOCOLATE	SCARF	SNOWMAN
COLD	FREEZING	ICE	SKATES	SWEATER

Solve the Puzzle

The goal of sudoku is simple: fill in the numbers 1-9 exactly once in every row, column, and 3x3 region. For example, look the solved puzzle below. Notice that every row, column and 3x3 region contain every number from 1-9 exactly once.

1	6	8	4	5	7	9	3	2
5	7	2	3	9	1	4	6	8
9	3	4	6	2	8	5	1	7
8	2	9	7	4	3	1	5	6
6	5	1	2	8	9	3	7	4
7	4	3	5	1	6	2	8	9
3	9	5	8	7	2	6	4	1
4	1	7	9	6	5	8	2	3
2	8	6	1	3	4	7	9	5

4	7		1					3
6			5		3			
		5		7	9		2	
	1		7		6	2		
	5				8	9	4	
							3	6
							8	
7		3			5			1
2	4	8		9		6		

© LiveSudoku.com

आप भी बाल पत्रकार बन सकते हैं

अगर आपकी उम्र 9 से 16 वर्ष के बीच हैं तो आप भी बाल पत्रकार बन सकते हैं।

अगर आप बाल पत्रकार के रूप में अपने आस–पास घट रही घटनाओं को इस अखबार के माध्यम से उठाना चाहते हैं तो आपका स्वागत है।

आप बच्चों से जुड़े किसी भी मुद्दे पर अपने विचार, लेख, फोटो, चित्र आदि इसमें छापने को भेज सकते हैं शर्त बस इतनी है कि यह आपकी अपनी रचना होनी चाहिए। यह अखबार आपकी राय को दूर–दराज इलाकों तक पहुंचाने की पूरी–पूरी कोषिष करेगा।

आप अपनी रचना हमें लिखकर भेंजें और जहां भी जरूरत हो संदर्भ का उल्लेख जरूर करें। आप अपनी रचना के साथ अपना नाम, उम्र, स्कूल/संस्था, पूरा पता फोन नम्बर आदि जरूर भेजें।

हमारा पता : संपादक मंडल, दिल्ली चिल्ड्रेन्स टाइम्स, द्वारा बटरफ्लाईज़,
163/4, प्रधान वाली गली, गॉव जौनापुर नई दिल्ली 110047
पुरस्कार : तीन सबसे अच्छी रचनाओं को आकर्शक पुरस्कार दिए जाएंगे

यह अखबार 9 से 16 वर्ष की उम्र के बच्चों द्वारा लिखित, संपादित एवं प्रकाशित है। इसका उद्देश्य दिल्ली एवं इसके आसपास के इलाकों को बच्चों के लिए सुरक्षित एवं दोस्ताना बनाना है। यह अखबार दिल्ली बाल अधिकार क्लब द्वारा बटरफ्लाइज़ के सहयोग से प्रकाशित किया जा रहा है।
दिल्ली बाल अधिकार क्लब c/o बटरफ्लाइज़, 163/4, प्रधान वाली गली, गॉव जौनापुर नई दिल्ली 110047
भारत फोन : +91-11-35391068, 69, 70 E-mail : butterfliesngo@gmail.com
परियोजना सहायता : Misereor Katholische Zentralstelle, Furenwicklungshilfee.V. Germany
केवल निजी वितरण के लिए सहयोग राशिः 5 रूपये

नया संपादकीय बोर्ड
मुख्य संपादक
सोनिया (Butterflies)
सहायक संपादक
प्राची (Butterflies)
विवेक (Casp Delhi unit)
चाइल्डरिपोर्टरः
गरिमा (Butterflies)
गुनगुन (Butterflies)
सानिया (Butterflies)
प्रियंका (Butterflies)
अभिशेक (Butterflies)
मनमोहन (Pragati wheel school)
कल्पना (Deepalaya)
विनीता (Angaza foundation)
तान्या (Pragati wheel school)
पुश्पा (Pragati wheel school)
देवेंद्र (Pragati wheel school)
सोनाली (Casp Delhi unit)
सिया (Casp Delhi unit)